जोशीमठ तहसील का नाम बदलकर 'ज्योतिर्मठ' तथा केसियाकुटोली तहसील का नाम बदलकर 'श्री कैंची धाम'

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में 12 जून को केंद्र सरकार ने उत्तराखंड के दो तहसीलों के नाम बदलने के उत्तराखंड सरकार के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।
- उत्तराखंड सरकार ने चमोली जिले के जोशीमठ तहसील का नाम बदलकर 'ज्योतिर्मठ' करने तथा नैनीताल जिले के केसियाकुटोली तहसील का नाम बदलकर 'श्री कैंची धाम' करने के प्रस्ताव को केंद्र सरकार ने मंजूरी दे दी है।
- इसके लिए केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने भी अनापत्ति प्रमाण पत्र (NOC) जारी किया है क्योंकि 'सर्वे आफ इंडिया' जो कि भारत में मानचित्र तैयार करने के लिए जिम्मेदार निकाय है केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत आता है।

जोशीमठ एवं ज्योतिर्मठ-

- चमोली जिले में स्थित जोशीमठ पिछले वर्ष भूमि धंसने के कारण एवं कई भूस्खलन गतिविधियों के कारण सड़कों एवं इमारत में भारी दरार आने के कारण चर्चा में था।
- समुद्र तल से 6150 फीट ऊंचाई पर स्थित जोशीमठ हिमालय पर्वत चढ़ाई अभियानों, ट्रैकिंग ट्रेल्स एवं बद्रीनाथ धाम जैसे धार्मिक तीर्थ स्थल के प्रवेश द्वार के रूप में जाना जाता है।

शंकराचार्य तथा ज्योतिर्मठ-

- ऐसा माना जाता है कि आदि गुरु शंकराचार्य ने 8 वीं शताब्दी में अद्वैत वेदांत दर्शन को बढ़ावा देने के लिए ज्योतिर्मठ की स्थापना की थी।
- ज्योतिर्मठ आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठों में से एक है जिसकी स्थापना आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार एवं सभ्यताओं के संरक्षण के लिए किया गया था।

Result Mitra

- हिंदू धार्मिक शास्त्रों के अनुसार ऐसा माना जाता है कि आदि शंकराचार्य ने यहां आकर अमर कल्पवृक्ष के नीचे तपस्या की थी जहां उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- ज्योतिर्मठ नाम उनके द्वारा यहां प्राप्त ज्ञान के प्रकाश पर रखा गया।
- ज्योतिर्मठ पहाड़ी जोशीमठ का प्राचीन नाम था।
- समय के साथ हुई कई क्रमिक और जैविक परिवर्तन जिसमें क्षेत्रीय भाषाओं, स्थानीय बोलियों और उच्चारण का प्रभाव शामिल है ने इस क्षेत्र का नाम ज्योतिर्मठ से जोशीमठ तक पहुंचाया।
- अतः ऐसा कहा जाता है कि ज्योतिर्मठ से जोशीमठ नाम का परिवर्तन किसी विशिष्ट ऐतिहासिक घटना के बजाय भाषायी और सांस्कृतिक विकास में हुए परिवर्तन को दर्शाता है।
- ज्योतिर्मठ के बदले जोशीमठ का नाम ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के पहले ही प्रचलित हो गया था जिसके कारण सरकारी रिकॉर्ड में इस क्षेत्र का नाम 'जोशीमठ' दर्ज हो गया।
- हालांकि धार्मिक संदर्भ में इस क्षेत्र का नाम ज्योतिर्मठ के रूप में लिया जाता रहा जबकि आमतौर पर इसे लोग जोशीमठ के रूप में इस्तेमाल करते रहे।

जोशीमठ से ज्योतिर्मठ करने की मांग एवं संभावित लाभ-

- हाल के कुछ वर्षों से इस क्षेत्र के निवासियों द्वारा इसके ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व को बरकरार रखने के लिए इसका नाम जोशीमठ से ज्योतिर्मठ करने की मांग समय समय पर करती रही।
- इसी को देखते हुए उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पिछले साल चमोली में एक कार्यक्रम के दौरान जोशीमठ के नाम बदलकर ज्योतिर्मठ किए जाने की घोषणा की थी।
- इस क्षेत्र का नाम बदलकर ज्योतिर्मठ करने से इस क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं
- आध्यात्मिक महत्व को बढ़ावा दे सकता है जो अधिक तीर्थयात्री को आकर्षित करके स्थानीय पर्यटन और आर्थिक विकास में मदद कर सकता है।
- हालांकि इस क्षेत्र की पारिस्थितिकी संवेदनशीलता अनियंत्रित पर्यटन और विकास कार्यों के कारण और प्रभावित हो सकती है।

कोसियाकुटोली और श्री कैंची धाम-

- कोसियाकुटोली तहसील का नाम बदलकर श्री कैंची धाम करने का मामला किसी ऐतिहासिक या धार्मिक विषय वस्तु से जुड़ा हुआ प्रतीत नहीं होता है।
- कोसियाकुटोली नाम, नैनीताल जिले में बहने वाली 'कोसी नदी' को संदर्भित करता है जो उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र के लिए काफी महत्वपूर्ण है।
- 'कोसी नदी' इस क्षेत्र के प्राकृतिक सुंदरता बढ़ाने के साथ-साथ स्थलीय पारिस्थितिकी और अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण है।
- कोसियाकुटोली का दूसरा शब्द 'कुटोली' किसी गांव या बस्ती को संदर्भित करता है।

Result Mitra

- कुमाऊनी संस्कृत में किसी स्थान का नाम उसकी भौगोलिक विशेषता के नाम पर रखना आम है।

कोसियाकुटोली और नीम करोली बाबा-

- कोसियाकुटोली का नाम बदलकर 'श्री कैंची धाम' करने का जो मुख्य कारण हो सकता है वह यहां पर नीम करोली बाबा द्वारा 1962 में स्थापित कैंची धाम आश्रम से जुड़ाव का मामला हो सकता है।
- नीम करोली बाबा प्रसिद्ध हिंदू गुरु और संत थे जिनकी अनुयायी लाखों में भारत सहित विदेशों में हैं।
- नीम करोली बाबा को उनके भक्ति योग, ईश्वर के प्रति समर्पण एवं उनकी शिक्षाओं के लिए इस क्षेत्र में काफी सम्मान है।
- कैंची धाम आश्रम में प्रतिवर्ष 15 जून (कैंची धाम आश्रम की स्थापना दिवस) को हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं।
- वर्ष 1973 में करोली बाबा के निधन के बाद उनके अनुयायी इस आश्रम को चलाते हैं।

आदिगुरु शंकराचार्य-

- 'शंकराचार्य' हिंदू धर्म की 'अद्वैत वेदांत परंपरा' में मठों के प्रमुखों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक धार्मिक उपाधि है।
- 'शंकराचार्य' मठों में एक धार्मिक शिक्षक की भूमिका निभाते हुए अपनी शिक्षा एवं अद्वैत वेदांत परंपरा का प्रसार करते थे।
- 16वीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य ने भारत के चारों दिशा (उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम) में चार मठों की स्थापना की जिनका संचालन करने वाला शंकराचार्य के नाम से जाना जाता था।

आदिशंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठ-

1. श्रृंगेरी मठ-

- श्रृंगेरी मठ भारत के दक्षिण में चिकमंगलूर में स्थित है।
- इस मठ से दीक्षा प्राप्त करने वाले सन्यासियों के नाम के बाद सरस्वती तथा भारती नाम विशेषण लगाया जाता है।

2. गोवर्धन मठ-

Result Mitra

- गोवर्धन मठ भारत के पूर्वी भाग में उड़ीसा राज्य के 'जगन्नाथपुरी' में स्थित है। इस मठ से दीक्षा पाने वाले सन्यासियों के नाम के बाद वन या आरण्य नाम विशेषण लगाया जाता है।

3. **शारदा मठ**-

- शारदा मठ भारत के पश्चिम में गुजरात के द्वारका धाम में स्थित है।

4. **ज्योतिर्मठ**-

- भारत के उत्तरी भाग में उत्तराखंड के बद्रीनाथ धाम में ज्योतिर्मठ स्थित है।

Result Mitra